भोगवती *f.* (a भोग serpens s. वत् in *fem.*) nomen urbis a serpentibus inhabitatae in tartaro. N. 5. 5.

भोगिन् (a 1. भोग s. इन्) 1) *Adj.* fructibus, perceptionibus, voluptatibus, cibis praeditus. Bh. 16. 14. 2) *Subst. m.* dominus, rex.

भोजन *n.* (r. भुज् s. अन) 1) actio edendi, fruendi. Sa. 4. 18. 2) cibus. N. 18. 6. 22. 12.

भोजनीय (r. भुज् s. अनीय) 1) edendus, fruendus. 2) *n.* cibus. N. 23. 10.

भोज्य (r. भुज् s. य) *i. q. praec.* Su. 4. 4.

भौम (a भूमि terra s. अ) terrenus, terrester. M. 27.

भ्रंश् 4. *P. A.* 1. *A.* (भ्रश्यामि, भ्रश्ये, भ्रंशे) cadere, elabi. N. 20. 2.: उत्तरीयम् अधो ऽपश्यद् भ्रष्टम्; Su. 1. 15.: भ्रष्टाभरणकेशान्ताः· *Adhibetur praesertim ad indicandam separationem vel privationem, cum ablat. rei*; *e. c.* N. 16. 37.: भ्रष्टा ज्ञातिभ्यः; M. 7. 111.: भ्रश्यते राज्यात् जीविताच्च; R. Schl. II. 74. 2.: राज्याद् भ्रंशस्व; 75. 34.: सतां लोकात् सताङ्ग कीर्त्याः ... भ्रश्यतु· — *Caus.* dejicere, ejicere, privare. N. 6. 15.: भ्रंशयिष्यामि तं राज्यात्· (V. भ्रंस् et cf. स्रंस्, ध्वंस् - gr. comp. 19. - germ. vet. *RIS* cadere, etiam *HRIS*, attenuato *a* in *i*, v. Graff. 2. 536.; *ur-RIS* surgere, sicut scr. पत् praef. उत्; *reisa* iter, *reisón* proficisci.)

c. परि *i. q. simpl.* N. 16. 23.: राज्यपरिभ्रष्टः; 18. 10.: परिभ्रष्टसुखेन·

c. प्र *id.* Ragh. 14. 54.: प्रभ्रश्यमानाभरणप्रसूना· *Cum instr. rei, quâ alqs privatur.* Mr. 14. 12.: प्रभ्रश्यते तेजसा (cf. युज् praef. वि)· — *Caus.* dejicere, privare. Ragh. 13. 36.: पदान् मघोनः प्रभ्रंशयां यो नघुषञ् चकार; Mah. 3. 601.: राज्यात् प्रभ्रंशितः·

c. वि *id.* Mah. 3. 3.: राज्यविभ्रष्ट·

भ्रंश *m.* (r. भ्रंश् s. अ) lapsus, exitium, ruina. Bh. 2. 63.

भ्रंस् 1. *A. i. q.* भ्रंश्·

भ्रस्ज् 6. *P. A.* (scribitur भ्रस्ज्, gr. 110[b])., भृज्जामि, भृज्जे, gr. 336.) assare, frigere, coquere. Bhatt. 14. 86.: बभ्रज्ज शोको रावणम् अग्निवत्· (V. भृज् et 2. भज् et cf. gr. φρύγω, φώγω; lat. *frigo*; hib. *bruighim* «I boil, seeth»; island. vet. *BAK*; germ. vet. *BACH, BAKK*; nostrum *BACK* coquere; v. पच्·)

भ्राण् 1. *P.* (शब्दे) sonare. *Cf.* ध्राण्, ध्वाण्, ध्वन्, स्वन्·

भ्रम् 1. et 4. *P.* भ्रमामि, भ्राम्यामि etiam भ्रम्यामि (P. III. 1. 70.) vagari, circumerrare, peregrinari. N. 15. 14.: विप्रयुक्तः स मन्दात्मा भ्रमति; Mah. 3. 12892.: लोके ऽस्मिन् भ्रमाम्य् एको ऽहम्; 14377.: बभ्राम तत्र तत्र वै; Bhatt. 12. 72.: भ्राम्यन्त्य् अभीताः परितः पुरन्नः; Bh. 1. 30.: भ्रमती 'व च मे मनः; Mah. 1. 2062.: दृष्टिर् भ्राम्यति मे· — *Pass. impers.* R. Schl. II. 96. 8.: बहुशो ऽभ्रामि ते· — *Cum acc.* peragrare. N. 16. 30.: अन्वेष्टारो ब्राह्मणाश्च भ्रमन्ति शतशो महीम्; Mah. 1. 5184.: ते देशम् बहुशो ऽभ्रमन्· — *Pass. impers. c. acc. loci.* Bhar. 3. 4.: भ्रान्तन् देशम् अनेकदुर्गविषमम्· भ्रान्त *act.* currens. A. 4. 38.: तथा भ्रान्ते रथे· — *Caus.* 1) circumvolvere, vibrare, rotare, agitare, quassare. Mah. 2. 762.: भ्रामयित्वा शतगुणम् ... गदा क्षिप्ता बलवता; 3. 117.: भ्राम्यमाणो ऽथ चक्रवत्; Bhatt. 15. 53.: शक्तिम् अबिभ्रमत्; H. 4. 49.: उत्क्षिप्या 'भ्रामयद् देहन् तूर्णं शतगुणाधिकम्· 2) *i. q. primit.* R. Schl. I. 44. 12.: तत्रै 'वा 'बिभ्रमद् देवी संवत्सरगणान् बहून्· (Cf. क्रम्, gr. ῥέμβω.)

c. उत् exsilire. Dr. 8. 19.: रथात् ... उद्भ्रम्य· — उद्भ्रान्त commotus, agitatus, perturbatus. Gita-Gov. 4. 1.: प्रेमभरोद्भ्रान्तम् माधवम्; Hit. 107. 7.: भवे ऽस्मिन् पवनोद्भ्रान्तवीचिविभ्रमभङ्गुरे·

c. परि circumerrare. A. 10. 31.: पर्यभ्रमन्त ... असुराः·

c. वि circumerrare, peragrare, pervagari. Nalod. 3. 26.: विभ्रान्तम् वनेच देव्याः; N. 15. 16.: स विभ्रमन् महीं सर्वाम्· — विभ्रान्त commotus, perturbatus. Bh. 16. 16.: अनेकचित्तविभ्रान्ताः·

c. सम्, सम्भ्रान्त commotus, perturbatus. A. 6. 10.: सर्वे सम्भ्रान्तमनसः; N. 13. 15.

भ्रमर *m.* apis (Wils.: *A large black bee*).

भ्रष्ट (a r. भ्रंश्, v. gr. 615.) v. भ्रंश्·

भ्रष्टाभरणकेशान्त (*Bah.* e भ्रष्ट elapsus et *Dvandv.* आभरणकेशान्त, आभरण + केशान्त, केश et